International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 08, August 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

कथक नृत्य में 'गतभाव' का सृजनात्मक पक्ष

शोधकर्त्री–तरूणा जांगिड़

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों की श्रृंखला में कथक नृत्य का प्रमुख स्थान है। यह एक भाव प्रधान नृत्य है इसमें वीर और रौद्र भाव से परिपूर्ण ताण्डव की पदचारियों के साथ लास्य का श्रृंगारिक और भावात्मक पक्ष भी अहम् भूमिका रखता है। कथक संस्कृत की दशक गण की 'कथ' धातु से विनिर्मित (कथ् + कर्तरिण्वुल) एक कृदन्त शब्द है। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार बताई गई है – 'कथयति यः सः कथकः' अर्थात् जो कथन करता है वह कथक है 'कथा कहे सो कत्थक कहिये।'[1]

देशी नृत्यों की सहज गतिमत्ता, संगीत का साहचर्य, नाट्य की सात्विक भावाभिव्यक्ति और शास्त्रों की मोहन चमत्कारिक छटाओं का अद्भुत संयोग है। मध्ययुग में इसे 'नटवरी' नाम से विभूषित किया है। कथक में कृष्ण सम्बन्धी अनेक पौराणिक कथाओं को भावों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

कथक नृत्य में भावाभिव्यक्ति प्रस्तुति के लिए गत–भाव, कवित आदि का प्रयोग होता है जिसमें 'गत भाव' का अपना एक विशिष्ट स्थान है।

'गत' शब्द का सामान्य अर्थ है रूप, अवस्था या दशा। जैसे साधारण तौर पर हम किसी अन्य व्यक्ति को कहते है ये क्या गत बना रखी है। किन्तु कथक नृत्य में 'गत' शब्द 'गति' से माना गया है जिसका अर्थ है चाल और भाव का अर्थ है। किसी भी वस्तु, व्यक्ति पदार्थ को देख, सुनकर जो मन में विचार ही उत्पन्न होते है, वही भाव है।

इसी प्रकार ''जब नृत्यकार अकेले ही किसी कथानक को लेकर उसके समस्त पात्रों का अभिनय स्वयं करते है उसे 'गतभाव' कहा गया है।''[2] इसे मूक अभिनय भी कहते है।

[1] डॉ. पुरू दाधीच, कथक नृत्य शिक्षा (द्वितीय भाग), पृ. सं. 72
[2] डॉ. पुरू दाधीच, कथक नृत्य शिक्षा (प्रथम भाग), पृ. सं. 78

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

इसमें लय–ताल की प्रधानता रहती है तथा तबले और सारंगी के साथ अभिनय किया जाता है। इसमें तीन ताल में द्रुतलय में नगमा बजाया जाता है। उसी के आधार पर 'गतभाव' को ताल में निबन्ध किया जाता है। इसमें आंगिक अभिनय के द्वारा सभी पात्रों को प्रदर्शित किया जाता है अर्थात् भिन्न हस्त मुद्राओं द्वारा जैसे–संयुक्त हस्त मुद्राएं, असंयुक्त हस्त मुद्राएं, देव हस्त, जाति हस्त आदि व दृष्टि संचालन, भृकुटी, ग्रीवा, पार्श्व, नासा, पाद चारी, स्थानक, मंडल भ्रमरी, गति, आदि के भेदों द्वारा आंशिक अभिनय की सृष्टि होती है। उदाहरणार्थ–यदि हमें राक्षस का भाव प्रस्तुत करना है तो दोनो हाथो से मुख के समीप शकट हस्त मुद्रा बनाकर व आंखों द्वारा क्रोध दिखाकर हम राक्षस का भाव प्रकट करते है।

नृत्यकार अकेला ही सभी पात्रों का अभिनय लय–ताल में स्वयं ही करता है। कथा के अनुसार एक क्षण में कृष्ण व एक क्षण में राधा का भाव चक्कर या पल्टी लेकर प्रस्तुत किया जाता है।

अधिकतर कथक की पुस्तकों एवं पाठ्यक्रम में 'गत निकास' एवं 'गत भाव' का ही उल्लेख है किन्तु बनजी के गत प्रसंग एवं गत लीला का भी स्पष्टीकरण दिया है। वे लिखते है –

(i) गत–प्रसंग – इसमें नर्तक छोटे–छोटे लीला चरित्र, अभिनय द्वारा प्रस्तुत करता है जैसे–माखन चोरी, पनघट, नायिका का वर्णन, अभिसारिका या फिर नौका विहार आदि।

(ii) गत–लीला – इसमें किसी पौराणिक गाथा पर विस्तृत अभिनय प्रस्तुत किया जाता है, जैसे–द्रोपदी चीरहरण, कालिया मर्दन, जटायु मोक्ष आदि।[3]

गत–प्रसंग और गत–लीला दोनो ही 'गत–भाव' के ही रूप है। नृत्यकार अपनी सृजनात्मकता के अनुसार प्रस्तुत करता है। जैसे–छोटी–छोटी कथाओं में राधा–कृष्ण की छेड़–छाड़, किस प्रकार राधा पनघट पर पानी लेने जा रही है, कृष्ण छुपकरण देखते है और लौटने पर राधा की मटकी कंकरी मारकर फोड़ देते है और फिर राधा कृष्ण पर क्रोध करती है। वह उनकी मुरली चुरा लेती है। इस प्रकार यह राधा–कृष्ण की देड–छाड़ नृत्यकार अपने अंदाज में प्रस्तुत करता है।

[3] डॉ. गीता रघुवीर, कथक में कवित्त, पृ. सं. 11

'गत भाव' में वाचिक व आहार्य अभिनय की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् इसमें गीत, गायन की व किसी वस्तु जैसे–मटकी, मुरली आदि की आवश्यकता नहीं होती, यह सब नर्तक स्वयं अंगो द्वारा भाव प्रस्तुत करता है।

पौराणिक कथाओं में कृष्ण राधा की छेड़–छाड़ के अलावा और भी मुख्य कथाएं है। जिसमें महाभारत का द्रोपदी चीरहरण, यह कथा नर्तककार आंगिक व सात्विक अभिनय के द्वारा प्रस्तुत करता है जिसमें किस प्रकार जब पांडव जुए में द्रोपदी को हार गए और दुर्योधन ने अपने अपमान का बदला लेने के लिए भरे दरबार में द्रोपदी को वस्त्र विहीन करने का निश्चय किया, तब द्रोपदी ने अपनी सहायता के लिए कृष्ण को पुकारा और कृष्ण ने द्रोपदी के चीर को इतना बढ़ाया, इतना बढ़ाया कि खींचते–खींचते दुशासन की भुजाएं थक गई और द्रोपदी निर्वस्त्र न हो सकी।

इन सभी कथाओं में नर्तक का सात्विक भाव होना आवश्यक है। तभी वह अपनी कल्पना के आधार पर इन कथाओं को पूर्ण रूप प्रदान कर पायेगा। जैसे कि किसी प्रकार दुर्योधन की क्रूरता, पांडवों की द्रोपदी की करूणा, दया, सहायता आदि भाव व्यक्त करना उन भावों द्वारा ही दर्शकों तक उस कथा का सारांश स्पष्ट बताना। यह सब एक कुशल नृर्तक ही कर सकता है। क्योंकि इसमें भावों के साथ लय–ताल का भी उतना ही ध्यान रखता पड़ता है।

जयपुर घराने में 'गतभाव' का अधिक प्रचलन है क्योंकि यह तो हम जानते है कि कथक नृत्य में जितने परिवर्तन हुए उतने किसी और नृत्य शैली में नहीं। कथ में मुगलो के साम्राज्य में नवीन प्रयोग हुए जिनमें आगे चलकर घराने बन गये। इसमें जयपुर घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना प्रचलित है। जिस प्रकार लखनऊ घराने में गतभाव का प्रयोग होता है। जिसमें नायक–नायिका सम्बन्धी लीलाओं पर भाव अधिक प्रस्तुत होता है।

जयपुर घराना कहीं न कहीं हमारे हिन्दू धर्म से जुड़े होने के कारण यहां धार्मिक पौराणिक कथाओं को 'गत भाव' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसी कारण 'गत भाव' का विकास जयपुर घराने में अधिक विस्तार से हुआ है।

'गत भाव' में नाट्य शास्त्र में वर्णनित नायिका भेदों को बिना बोले ही अंगों के द्वारा भाव प्रस्तुत किया जाता है। यथार्थ में यह अंश 'कथक' का 'गत–भाव' ही है। नायिका के

हाव–भाव और क्रियाओं को कथक नर्तक विशिष्ट प्रकार की गतियों से अभिव्यक्त करता है।[4]

गति अर्थात् चाल से माना गया है गत भाव का आरम्भ नर्तक पल्टा लेकर करता है। उसके पश्चात् कथा से जुड़े पात्र का अंगों के द्वारा परिचय देते हुए चाल चल कर मंच पर आगे आता है, उसके पश्चात् पद संचालन के द्वारा व अंगो के द्वारा वह अपनी कथा को प्रस्तुत करता है।

गत–भाव में राम, कृष्ण, शिव इत्यादि की जीवनी की विषय–वस्तु को नर्तक दर्शाता है तथा गत भाव को पल्टा लेकर समाप्त करता है फिर कोई एक छोटी–सी तिहाई के द्वारा गत भाव समाप्त किया जाता है।

कथक नृत्य में परम्परागत रूप से जिन कथानकों को 'गत–भाव' के अन्तर्गत दिशाया जाता है उसमें प्रमुख हैं – अहिल्या–उद्धार, उद्धव लीला, उषा–अनिरूद्ध, उर्वशी, कालिया, कालिया–दमन, कृष्ण लीला, गंगा अवतरण, गज और ग्राह, गीत–गोविन्द, गोवर्धन लीला, त्रिपासुर–वध, दशावतार, दान लीला, द्रोपदी–चीरहरण, पनघट लीला, पार्वती मंगल, पूतना–वध, माखन चोरी, मोहिनी–भस्मासुर आदि।

अतः गतभाव के द्वारा कलाकार अपनी सृजनशीलता की कलात्मक प्रस्तुति देता है।

[4] डॉ. माया टाक, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, पृ. सं. 58